पु॰ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class –VII

HINDI

Specimen Copy

Year- 2020-21

June Month

पाठ-3 हिमालय की बेटियाँ
लेखक : नागार्जुन

शब्दार्थ

1 विशाल- बड़ा

2 खिलखिलाकर- जोर-जोर से

3 कौतूहल- जिज्ञासा

4 घाटी-पर्वतोंके बीच की भूमि

5 आकर्षक- अपनी ओर खीचनें वला

6 वास्तव- हकीकत

7 प्रेयसी-प्रेमिका

8 तबियत -सेहत

9 विराट- बड़ा

10 सिर धुनना- शोक के कारण बहुत दुखी होना

11 बालिका- छोटी लड़किया

12 झिझक- संकोच

13 संभ्रात- शिष्ट

14 अधित्यकाएँ- पहाड़ के ऊपर की समतल जमीन

15 नटी - नर्तकी

16 प्रतिपादन -लौटाना

17 मुदित -प्रसन्न

अतिलघु प्रश्न

1 लेखक ने हिमालय की बेटियाँ किन्हें कहा है?

उत्तरः लेखक ने हिमालय की बेटियाँ हिमालय से निकलने वाली नादियों को कहा है।

2 मैदानी भागोंमेंनदियाँ कैसी दिखती है?

उत्तरः मैदानी भागों में नदियाँ बड़ी गंभीर ,शांत और अपने में खोई हुई लगती हैं।

3 हिमालय के जंगल में मुख्यतया कौन-कौन से वृक्ष पाए जाते हैं?

उत्तरः हिमालय के जंगलों में देवदार ,चीड़ सरो, चिनार,सफेदा, कैल आदि वृक्ष पाए जाते हैं।

4 सतलज के प्रगतिशील जल ने लेखक पर क्या असर डाला?

उत्तरःलेखक ने जब सतलज नदी के जल में अपने पैर लटकाए, तो उसकी थकान, उदासी तथा तबीयत का ढीलापन जाता रहा और वह प्रसन्न हो गया।

लघु प्रश्नः

1 लेखक नदियों के प्रति किस प्रकार के भाव रखता है?

उत्तरः लेखक अपने दिल में नदियों क प्रति आदर और श्रद्धा का भाव रखता है। ये नदियाँ उसे किसी संभ्रात महिला की तरह तरह उनकी धाशांत और गंभीर लगती थीं। लेखक इनमें आत्मीय लगाव भी रखता था। वह माँ,,दादी,,मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकी लगाकर प्रेमानुभूति करता था।

नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफ़ी पुरानी है। ले कन लेखक नागार्जुन उन्हें और कन रूपों में देखते हैं ?

लेखक नदियों को माँ मानने की परपंरा से पहले इन नदियों को स्त्री के सभी रूपों में देखता है जिसमें वो उसे बेटी के समान प्रतीत होती है। इस लए तो लेखक नदियों को हिमालय की बेटी

कहता है। कभी वह इन्हें प्रेयसी की भांति प्रेममयी कहता है, जिस तरह से एक प्रेयसी अपने प्रयतम से मलने के लए आतुर है उसी तरह ये नदियाँ सागर से मलने को आतुर होती हैं, तो कभी लेखक को उसमें ममता के स्वरूप में बहन के समान प्रतीत होती है जिसके सम्मान में वो हमेशा हाथ जोड़े शीश झुकाए खड़ा रहता है।

ख्सतीन धः

ट संधु और ब्रह्मपुत्र की क्या वशेषताएँ बताई गई हैं ?

इनकी वशेषताएँ इस प्रकार हैः–

क्ष्ज्ञि संधु और ब्रह्मपुत्र ये दोनों ही महानदी हैं।

क्ष्ज्ञिज्ञ इन दोनों महानदियों में सारी नदियों का संगम होता है।

क्ष्ज्ञिज्ञज्ञ ये भौगो लक व प्राकृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण नदियाँ हैं। ये डेल्टाफार्म करने के लए, मत्सय पालन, चावल की फसल व जल स्रोत का उत्तम साधन है।

क्ष्विज्ञ ये दोनों ही पौरा णक नदियों के रूप में वशेष पूज्यनीय व महत्वपूर्ण हैं।

दीर्घ प्रश्न –

1.काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है ?

नदियों को लोकमाता कहने के पीछे काका कालेलकर का नदियों के प्रति सम्मान है। क्यों क ये नदियाँ हमारा आरम्भिक काल से ही माँ की भांति भरण–
पोषण करती आ रही है। ये हमें पीने के लए पानी देती है तो दूसरी तरफ इसके द्वारा लाई ग ई रूपजाऊ मट्टी खेती के लए बहुत उपयोगी होती है। ये मछली पालन में भी बहुत उपयो गी है अर्थात् ये नदियाँ सदियों से हमारी जी वका का साधन रही है। हिन्दू धर्म में तो ये नदि याँ पौरा णक आधार पर भी वशेष पूजनीय है। हिन्दु धर्म में तो जीवन की अन्तिम यात्रा भी

इन्हीं से मलकर समाप्त हो जाती है। इस लए ये हमारे लए माता के समान है जो सबका क ल्याण ही करती है।

2.हिमालय की यात्रा में लेखक ने कन– कन की प्रशंसा की है ?

लेखक ने हिमालय यात्रामें निम्न ल खत की प्रशंसा की है –

क्ष्ज्ञि हिमालय की अनुपम छटा की।

क्ष्ीज्ञि हिमालयसेनिकलेवालीनदियोंकीअठखे लयोंकी।

क्ष्ीीज्ञि उसकीबरफ़सेढकीपहा ड़योंकीसुदंरताकी।

क्ष्विज्ञ पेड़–पौधोंसेभरीघाटियोंकी

क्ष्वज्ञ देवदार, चीड़, सरो, चनार, सफैदा, कैलसेभरेजंगलोंकी।

3. हिमालय जाकर लेखक ने नदियोंके प्रति अपनी सोच मेंक्या-क्या अंतर पाया?

उः हिमालय पर जाने से पूर्व लेखक सोचता था कि नदियाँ किसी संभ्रांत ,प्रौढ महिला की तरह शांत एवं गंभीर रहती हैं।उनकी धारा में डुबकी लगाने से माँ, दादी, मौसी, नानी आदि की गोद की तरह सुखानुभूति होती है, पर उसने उन्हींनदियों को अत्यंत दुबले-पतले रूप में पाया, जो मैदानों में विशाल रूप धारण के लेती हैं। इस प्रकार उसने नदियों के प्रति अपनी सोच में अंतर पाया।

व्याकरण

संज्ञा - **थं** समूहवाचक संज्ञा क्या होती है :–इसे समुदाय वाचक संज्ञा भी कहा जाता है। जो संज्ञा शब्द कसी समूह या समुदाय का बोध कराते है उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदहारण :- गेंहू का ढेर, लकड़ी का गट्ठर , वद्या र्थयों का समूह , भीड़ , सेना, खेल आदि

त्रं द्रव्यवाचक संज्ञा क्या होती है :- जो संज्ञा शब्द कसी द्रव्य पदार्थ या धातु का बोध कराते है उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदहारण :- गेंहू , तेल, पानी, सोना, चाँदी, दही , स्टील , घी, लकड़ी आदि।

नीचे लखे वाक्यों में से संज्ञा शब्द बताइए-

खंक्ष्ज्ञ राधा कल दिल्ली जाएगी।

ाज्ञ कल
बज्ञ राधा
चज्ञ दिल्ली
दज्ञ राधा, दिल्ली

खंधज्ञ राम खेल रहा है।

ाज्ञ राम
बज्ञ खेल
चज्ञ रहा है

खंटज्ञ वह आगरा में रहता है।

ाज्ञ वह
बज्ञ आगरा
चज्ञ रहताहै

खंथज्ञ बुढ़ापा कसी को अच्छा नहीं लगता।

ाज्ञ बुढ़ापा
बज्ञ कसी को
चज्ञ अच्छा नहीं लगता

खंत्रज्ञ वह पुस्तक पढ़ती है।

ाज्ञ वह
बज्ञ पुस्तक
चज्ञ पढ़ती है

खंघज्ञ कसान हल चलाता है।

ाज्ञ कसान
बज्ञ हल
चज्ञ हल, कसान

खंछज्ञ लता मंगेशकर बहुत अच्छा गाती है।
ाज्ञ लता मंगेशकर
बज्ञ बहुत अच्छा
चज्ञ गाती है
खंषज्ञ वह कल लाल कला देखने गया।
ाज्ञ वह
बज्ञ लाल कला
चज्ञ कल
खंक्षज्ञ घोड़ा दौड़ रहा है।
ाज्ञ घोड़ा
बज्ञ रहा है
चज्ञ दौड़
खंत्रएज्ञ कल मैं बनारस जाऊंगा।
ाज्ञ मैं
बज्ञ कल
चज्ञ बनारस

निबंध

भारत में नदियों का महत्व

भारत में नदियों का महत्वःइतिहासकार भारत में नदियों की भू मका पर बहुत महत्व देते हैं। नदियों के कनारे पर प्राचीन भारत की सभ्यताओं का वकास हुआ। हड़प्पा सभ्यता के रूप में जाना जाने वाला पहला पूर्व-ऐतिहा सक प्राचीन भारतीय सभ्यता संधु नदी द्वारा बनाई गई संधु घाटी पर वक सत हुई थी। भारत के कई शक्तिशाली नदियों हिमालय से उभरते हैं। खड़ी घाटियों के माध्यम से घूमते हुए, कई सहायक नदियों से आवाज़ इकट्ठा करते हुए, जैसा क वे जाते हैं, संधु और गंगा या गंगा वपरीत दिशाओं में अपने रास्ते चलते हैं, जो अरब सागर में एक हो जाता है, दूसरे बंगाल की खाड़ी में। दोनों पंद्रह सौ

मील लंबा हैं गंगा ब्रह्मपुत्र द्वारा उनके मुंह के पास जुड़ा हुआ है, जो उन सभी की सबसे लंबी नदी है। इन शक्तिशाली धाराओं की तुलना में दक्कन पठार की नदियों और द क्षण भारत कम प्रभावशाली हैं।

भारतीय इतिहास में नदियों ने हमेशा महत्वपूर्ण भू मका निभाई है अपने बैंकों के साथ-साथ सबसे पहले बस्तियों को पहले बड़े शहरों में बड़ा हुआ। पंजाब में संधु और उसकी सहायक उपनिवेशों द्वारा प्रदत्त उपहार, गंगा नदी के पांच नदियों की जमीन और हजारों सालों से भारत-गंगा के मैदान के वकास की शुरुआत में भारत की भारी जनसंख्या ने उपजाऊ घाटियों की खेती की है । क्या यह कोई आश्चर्य नहीं है क शुरुआती समय से भारत के जीवन को प वत्र माना गया? आज तक, हिंदू गंगा की "गंगा गंगा" कहते हैं महत्वपूर्ण शहरों और राजधानियों जैसे हस्तिनापुर, प्रयाग, और पाटलीपुत्र नदियों के तट पर स्थित थे

नदियों के कई सामाजिक, वैज्ञानिक व् आ र्थक लाभ है । नदियों से जीवन के लए अत्यन्त आवश्यक स्वच्छ जल प्राप्त होता है यही कारण है क अ धकांश प्राचीन सभ्यताएं ,जनजातियाँ नदियों के समीप ही वक सत हुईं। उदाहरण के लए संधु घाटी सभ्यता , संधु नदी के पास वक सत होने के प्रमाण मले है । सम्पूर्ण वश्व के बहुत बड़े भाग मे , पीने का पानी और घरेलू उपयोग के लए पानी , नदियो के द्वारा ही प्राप्त कया जाता है। आ र्थक दृष्टि से भी देखे तो नदियाँ बहुत उपयोगी होती है क्यों क उद्योगो के लए आवश्यक जल नदियों से सरलता से प्राप्त कया जा सकता है । कृ ष के लए , संचाई एक महत्वपूर्ण प्र क्रया है, इसके लए आवश्यक पानी नदियों द्वारा प्रदान कया जाता है । नदियाँ खेती के लए लाभदायक उपजाऊ जलोढ़ मट्टी का उत्तम स्त्रोत होती हैं। नदियां न केवल जल प्रदान करती है बल्कि घरेलू एवं उद्यो गक गंदे व अव शष्ट पानी को अपने साथ बहकर ले भी जाती है। बड़ी नदियों का उपयोग जल परिवहन के रूप मे भी कया जा **रहा है।**

गतिविधिः हिमालय और नादियों के चित्र लागाइए और हिमालय पर पाँच वाक्य लिखिए।

स्वाध्यायःहिमालय से निकलने वाली नदियों के नाम लीखिए चित्र चिपकाइए और किन्ही दो का वर्णन कीजिए।

पाठ 4 कठपुतली
कवि - भवानीप्रसाद मिश्र

1 कठपुतली गुस्से से------------पर छोड़ दो ।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है। जिसके लेखक है भवानी प्रसाद मिश्र

व्याख्याःकवि कहता हे कि दूसरों के इशारे पर नाचने वाली कठपुतली को देखकर बहुत गुस्से में आकर कहने लगी । ये धागे मेरे शरीर कर आगे और पीछे क्योंबाँध रखे है?तुम इन्हें तोड़ दो और मुझे स्वतंत्र कर दो। मुझे मेरे पाँवों पर स्वतंत्र होकर चलने दो।

विशेषः कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा का वणन है।

2 सुनकर बोली और-और --------बहुत दिन हुए मन के छंद छुए हुए।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है। जिसके लेखक है भवानी प्रसाद मिश्र

व्याख्याः कवि कहता है कि एक कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा है सुनकर अनय सभी कठपुतली बोलने लगी की

व्याख्याः कवि कहता है कि एक कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा है सुनकर अन्य सभी कठपुतली बोलने लगी की हमे बहुत दिन हुए अपने मन के बात नहीं की। हमने मन की इच्छाओं को दबाकर रखा है।

विशेषः गुलाम कठपुतलियों का वर्णन है।

3 पहली कठपुतली सोचने लगी------मेरे मन में जगी।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है। जिसके लेखक है भवानी प्रसाद मिश्र

व्याख्याः कवि कहता है कि अन्य कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा देखकर पहली कठपुतली सोचने लगी यह मेरे मन में कैसी इच्छा जागी है। अबबय ह सबकी जिम्मेदारी के बारे में विचार करते लगी थी कि क्या वे मनचाहा जीवन जी पाएगी? क्या उनका यह कदम ठीक होगा।

विशेषः पहली कटपुतली के मन की इच्छा का वर्णन है।

शब्दार्थ

1 पाँव पर छोड़ देना- आत्मनिर्भर होने देना

2 गुस्से से उबली- बहुत कोधित हुई

3 मन के छंद छुना -मन की पुकार सुनना

4 कठपुतली- दूसरोंके इशारों पर नाचने वाली

5 और-और- अन्य सभी

6 पाँव पर छोड़ देना- स्वतंत्र रहने दो

7 जगी- जागी है

अति लघु प्रश्न

1कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?ः

कठपुतली को गुस्सा इस लए आया क्यों क वो धागे में बंधी हुई पराधीन है और वह स्वतंत्रता की इच्छा रखती है।

2कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, ले कन वह क्यों नहीं खड़ी होती ?

कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है ले कन वह खड़ी नहीं होती कयों क वह धागे से बंधी हुई होती है, उसकेअन्दर स्वतंत्रता के लए लड़ने की क्षमता नहींहैऔर अपने पैरो पर खड़े होने की शक्ति भी नहीं है।

:

3पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुत लयों को क्यों अच्छी लगी ?

पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुत लयों को अच्छी लगी क्यों क पहली कठपुतली स्वतंत्र होने की बात कर रही थी और दूसरी कठपुत लयाँ भी बंधन से मुक्त होकर आज़ाद होना चाहती थीं।

लघु प्रश्न

1कठपुतली को गुस्सा क्यों आया ?

कठपुतली को गुस्सा इस लए आया क्यों क वो धागे में बंधी हुई पराधी न है और वह स्वतंत्रता की इच्छा रखती है।

2कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, ले कन वहक्यों नहीं खड़ी होती ?

कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है ले कन वह खड़ी नहीं होती क्यों क वह धागे से बंधी हुई होती है, उसके अन्दर स्वतंत्रता के लए लड़ने की क्षमता नहीं है और अपने पैरो पर खड़े होने की शक्ति भी नहीं है।

3 पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुत लयों को क्यों अच्छी लगी ?

पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुत लयों को अच्छी लगी क्यों क पहली कठपुतली स्वतंत्र होने की बात कर रही थी और दूसरी कठपुत लयाँ भी बंधन से मुक्त होकर आज़ाद होना चाहती थीं।

सर्वनाम के भेद :-

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निजवाचक सर्वनाम
3. निश्चयवाचक सर्वनाम
4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
5. संबंधवाचक सर्वनाम
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

1.पुरुषवाचक सर्वनाम केभेद

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं -:

1.उत्तमपुरुष :जिन शब्दों का प्रयोग बोलने वाला खुद के लए करता है। इसके अंतर्गत मैं, मेरा, मेरे, मेरी, मुझे, मुझको, हम, हमें, हमको, हमारा, हमारे, हमारी आदि आते हैं।जैसे - मैं फुटबॉल खेलता हूँ। हम दो, हमारे दो।

2. मध्यमपुरुष : जिनशब्दों का प्रयोग सुननेवालेके लए कयाजाताहै।इसकेअंतर्गत तू, तुझे, तुझको, तेरा, तेरे, तेरी, तुम, तुम्हे, तुमको, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, आप आदि आतेहैं।जैसे−: तुम बहुतअच्छेहो।

3. अन्यपुरुष : जिन शब्दों का प्रयोग कसी तीसरे व्यक्ति के बारे में बात करने के लए होताहै।इसकेअंतर्गत यह, वह, ये, वे आदिआतेहैं।इनमें व्यक्तिवाचकसंज्ञा केउदाहरणभीशा मल हैं।

2.निजवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग वक्ता कसी चीज़ को अपने साथ दर्शाने या अपनी बताने के लए करता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

निजवाचक सर्वनाम के उदाहरणः

जैसे−:

- मैं अपने कपडे स्वयं धोलूँगा।
- मैं वहां अपनेआप चला जाऊंगा।

3. निश्चयवाचकसर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से कसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान की निश्चितता का बोध हो वे शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

निश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरणः

जैसे −: यह, वहआदि।

- यह कार मेरीहै।
- वह मोटर बाइक तुम्हारी है।

- ये पुस्तकें मेरीहैं।
- वे मठाइयाँ हैं।
- यह एक गायहै।

अनुच्छेद

छात्र जीवन

छात्र जीवन किसी भी व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग होता है।इसी समय व्यक्ति के चरित्र की नींव पड़ जाता है। बच्चों में सीखने की बहुत प्रवृत्ति होती है।युवा होने तक वह अपनी अच्छी या बुरी आदतें अपनाने लगता है।

उसे छात्र जीवन में सावधान रहकर अच्छी आदतें ही अपनानी चाहिए। इसके साथ ही छात्रों को कुए के मेढक के समान हमेशा घर में नहीं रहना चाहिए।अर्थात उसे केवल किताबी -कीड़ा बनकर नहीं रहना चाहिए। छात्र -जीवन का उददेश्य जीवन के सभी रूपों का अपने खुले नज़रिए से देखना है छात्र उस यात्री के समान है जिसे अपनी दूरियाँखुद तय करनी हैं। रास्ता उसके बदले में दूरी तय नहीं कर सकता। पुस्तकें और शिक्षक केवल उसे उसका मार्ग बता सकते हैं ।उसे बताए हुए रास्ते में चलकर अपनी मंज़िल तक स्वयं पहुँचान होता है।

स्वाध्यायः मनोरंजन के लिए दिखाए जाने वाले किसी एक खेल के बारे में लिखिए-

गतिविधिः कठपुतली का चित्र बनाए और उसके बारे में पाँच वाक्य लिखिए

बाल महाभारत

पाठ 6 से 10

शब्दार्थ

1 बैर - दुशमनीस

2 सानी - मुकाबला करने वाला

3 पोषित - पाला पोषा हुआ

4 मशाल - दीपशिखा

5 आहत - घायल

6 सुत-पुत्र - सारथी का बेटा

7 धावा बोलना - हमला करना

8 पराक्रमी - अत्यंत साहस वाले

9 कुमंत्रणा - बुरी सलाह

10 पुरवासी - गाँव वाले

11 वंचित - हीन, छीन लिया गया

12 अधीन - नियंत्रण

13 गूढ़ - गुप्त

14 हाँडी़ - मिटटी के घड़े जैसा बर्तन

15 विपदा - संकट

1 कुंती ने लोक लाज के डर से किसका छोड़ दिया?

उत्तरः अपने पुत्र कर्ण को

2 कुंती का विवाह किससे हुआ?

उत्तरः राजा पांडू से

3 कौरवों ने किसे मारने का निश्चय किया?

उत्तरः भीम को

4 भीम को किसने समझाया?

उत्तरः युधिष्ठिर

5 पांडवों ने किससे अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्राप्त की?

उत्तरः पांडवों ने पहले कृपाचार्य और बाद मे द्रोणाचार्य से शिक्षा प्राप्त की।

6 दानवीर कौन था?

उत्तरः कर्ण

7 द्रोणाचार्य को किसने धनुर्विधा की शिक्षा दी?

उत्तरः परशुराम ने

8 जन्म से कौन अंधा था?

उत्तरः धृतराष्ट्र

9 दुर्योधन से बचने का उपाय किसने युधिष्ठर को दिया?

उत्तरःविदुर

10 भीम ने राक्षस की लाश कहा पटक दी ?

उत्तरः फाटक पर

पाठ-5 मिठाईवाला

लेखकः भगवतीप्रसाद वाजपेयी

ऋंः स्वर- आवाज

2 पुलकित- खुश होना

3 उद्यान- बगीचा

4 स्नेहाभिषिक्त- प्रेम में डूबा हुआ

5चिकों-घुघटों

6 मुरली -बाँसुरी

7 उस्ताद- होशियार ,निर्पुण

8 साफ़ा-पगड़ी

9 मादक -नशीला

10 हानि- नुकसान

11 दुअन्नी- बीस पैसा

12 स्मृति- याद

13 आजानुलंबित- घुटनों तक लंबे

14 चाव- मजे से

15 केश -बाल

16 मास- महीना

अतिलघु

1 मठाईवाला अलग–अलग चीज़ें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था ?

बच्चे एक चीज़ से ऊब न जाएँ इस लए मठाईवाला अलग – अलग चीज़ें बेचता था। बच्चों में उत्सुकता बनाए रखने के लए वह महीनों, बाद आता था।साथहीचीज़ेंन मलनेसेबच्चेरोएँ , ऐसा मठाईवालानहींचाहताथा।

धं मठाईवाले में वे कौन से गुण थे जिनकी वजह से बच्चे तो बच्चे, बड़े भी उसकी ओर खंचे चले आते थे ?

निम्न ल खत कारणों से बच्चे तथा बड़े मठाईवाले की ओर खंचे चले आते थे–

क्ष्ज्ञ मठाई वाला मादक – मधुर ढंग से गाकर अपनी चीज़ों को बेचता था।

क्षiiiङ्ग वह कम लाभ में बच्चों को खलौने तथा मठाइयाँ देता था।

क्षiiiiङ्ग उसके हृदय में बच्चों के लए स्नेह था,   वहकभीगुस्सानहींकरताथा।

क्षविङ्ग हरबारनईचीज़ेंलाताथा।

ट खलौनेवाले के आने पर बच्चों की क्या प्रति क्रया होती थी ?

खलौनेवाले के आने पर बच्चे खलौने देखकर पुल कत हो उठते थे। बच्चों का झुंड खलौने वाले को चारों तरफ़ से घेर लेता था। वे पैसे लेकर खलौने का मोलभाव करने लगते थे। खलौने पाकर बच्चे खुशी से उछलने – कूदने लगते थे।

लघु प्रश्न

1.रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खलौनेवाले का स्मरण क्यों हो आया ?

मुरलीवाला भी खलौनेवाले की तरह ही गागाकर खलौने बेच रहा था। रोहिणी को खलौने वाले का स्वर जाना पहचाना लगा इस लए उसे खलौनेवाले का स्मरण हो आया।

2. कसकी बात सुनकर मठाईवाला भावुक हो गया था ? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया ?

रोहिणी की बात सुनकर मठाईवाला भावुक हो गया। इस तरह के जीवन में उसे अपने बच्चों की झलक मल जाती है। उसे ऐसा लगता है क उसके बच्चे इन्हीं में कहीं हँस – खेल रहे हैं। यदि वो ऐसा नहीं करता तो उनकी याद में घुल–

घुलकर मर जाता, क्यों कउसकेबच्चेअबजिंदानहींथे। इसी कारण उसने इस व्यवसाय को अपनाया।

3.'अब इस बार ये पैसे न लूँगा'-कहानी के अंत में मठाईवाले ने ऐसा क्यों कहा ?

कहानी के अंत में रोहिणी द्वारा मठाई के पैसे मठाईवाले ने लेने से मना कर दिया क्यों क चुन्नू और मुन्नू को देखकर उसे अपने बच्चों का स्मरण हो आया। उसे ऐसा लगा मानो वो अपने बच्चों को ही मठाई दे रहा है।

दीर्घ प्रश्न

1.इस कहानी में रोहिणी चक के पीछे से बात करती है। क्या आज भी औरतें चक के पीछे से बात करती हैं ? यदि करती हैं तो क्यों ? आपकी राय में क्या यह सही है ?

आज भी कुछ औरतें चक के पीछे से बात करती हैं जैसे- ग्रामीण महिलाएँ तथा कुछ मुस्लिम परिवारों की महिलाएँ भी ऐसा करती हैं क्यों क उनमें पर्दा प्रथा का प्रचलन आज भी है। आज के समाज में पर्दा प्रथा सही नहीं है। इसका प्रचलन धीरेधीरे कम होता जा रहा है।क्यों क इससे महिलाओं का संकोच पता चलता है जो उनकी प्रगति में बाधक है।

2. मठाईवाले के परिवार के साथ क्या हुआ होगा ? सो चए और इस आधर पर एक और कहानी बनाइए ?

मठाईवाला एक प्रतिष्ठत तथा सुखी सम्पन्न व्यापारी था। दुर्घटनावश कसी दिन उनकी पत्नी और उनके दोनों बच्चों की मृत्यु हो गई। पत्नी और बच्चों के न होने के कारण व्यापारी को अपना अस्तित्व और अपनी सम्प त्त व्यर्थ लग रही थी। अतः इसी कारण मठाईवाले ने अपने दुःख को भुलाने के लए दूसरे बच्चों की खुशी में अपनी खुशी को ढूढ़ने की चेष्टा की। इसमें उसे काफी हद तक सफलता भी मली।

3.आपके माता- पता के ज़माने से लेकर अब तक फेरी की आवाज़ों में कैसा बदलाव आया है ? बड़ों से पूछकर ल खए।

वक्त के साथ फेरी के स्वर भी बदल गए हैं।जैसे ळ पहले फेरी वाले गाकर या क वता के माध्यम से मधुर स्वर में अपने उत्पाद के गुणों को लोगों तक पहुँचाते थे परन्तु आज के फेरीवालों के स्वर में वैसी मधुरता सुनने को नहीं मलती।साथ ही लाउडस्पीकर जैसे उपकरणों का भी प्रयोग होने लगा है।

व्याकरण

थं अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से वस्तु, व्यक्ति, स्थान आदि की निश्चितता का बोधन ही होता वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरणः

जैसे–ः कुछ, कोई आदि।

- मुझे कुछ खानाहै।
- मेरे खाने में कुछ गर गया।
- मुझे बाज़ार से कुछ लाना है।
- कोई आ रहा है।
- मुझे कोई नज़रआ रहा है।

त्रं प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग कसी वस्तु, व्यक्ति आदि के बारे में कोई सवाल पूछने या उसके बारे में जान्ने के लए कया जाता है उन शब्दों को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

प्रश्नवाचक सर्वनाम केउदाहरणः

जैसे– कौन, क्या, कब, कहाँ आदि।

- देखोतो कौन आयाहै ?
- आपने क्या खायाहै ?

घं सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कसी वस्तु या व्यक्ति का सम्बन्ध बताने के लए कया जाए वे शब्द सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम के उदाहरणः

जैसे :- जो-सो, जैसा-वैसा आदि।

- जैसी करनी वैसी भरनी।
- जो सोवेगा सो खोवेग जो जागेगा सो पावेगा।

जैसा बोओगे वैसा काटोगे

निबंध

समय का सदुप्रयोग

समय निरंतर गातिशील है। समय का चक्र लगातार घूमता रहता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। विधाता प्रत्येक प्राणी के जीवन क्षण निशिचत करके उसे इस धरती पर भेजता है। इस निश्चित समय में उसे अपने सभी कार्य पूरे करने होते हैं। जीवन का प्रत्येक क्षण अमूल्य है। यदि एक क्षण का भी दरूप्रयोग किया जाता है तो मानव को उछताना पड़ता है। अतः समय का सदुप्रयोग करना आवश्यक है।

समय और मानव जीवन प्रकृति की अमूल्य निधि हैं। दोनों का ताल- मेल होना आवश्यक है।यदि समय के अनुसार चलना नहीं सीखा तो जीवन की दौंड में पीछे रह जाएँगे।हमें समय को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। जो समय को नष्ट करता है समय उसको नष्ट कर देता है।जो समय के साथ चलता है उसे सफलता, यश,

सम्मान मिलता है खुशियों से उसकी झोली भरी रहती है।इसलिए संत कबीर ने कहा है-

काल करै सो आज कर, आज करै सौ अब्ब।

पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।

हर काम के लिए एक समय और हर समय के लिए एक काम निर्धारित होता है। अब यह मानव की बुदिध और सोच पर निर्भर करता है कि उसने इस बात को समझा है कि नहीं रोगी को दवा समय पर न मिले तो उसका इलाज नहीं हो पाता । इक मिनट के विलंब से पहुँचन पर स्टेशन से गाडी- छूट जाती है। नेपोलियन के उच्च अधिकारी के पाँच मिनट देर से सेना लेकर आने से नेपोलियन की हार हुई। वह बंदी बना लिया गया।जो व्यक्ति समय- तालिका बनाकर अपना कार्य करते हैं, वे ने तो कभी खाली बैठते हैं और न कभी यह कहते हैंकि समय की कमी के कारण हम अमुक कार्य नहीं कर पाए।

समय पर कार्य करने वाला व्यक्ति केवल अपना भला नहीं करता बलिक अपने परिवार ,समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में भी सहायक होता है। समय के सदुप्रयोग से मनुष्य धनवान, बुद्धिमान तथा शक्तिमान बन सकता है।समय केवल उनका साथ देता है, जो उसके मूल्य को पहचानकर उसका उचित उपयोग करते हैं अवसर चूक जाने पर समय कभी माफ़ नही करता।सही कहा गया है- क्या वर्षा जब कृषि सुखाने।

विदयाथी -जीवन में समय का और भी महत्व होता हैं।विदयार्थी के लिए एक-एक क्षण का महत्व होता है। विदयार्थी जीवन में प्राप्त की हुई विदया एवं योग्यता पर ही भावी जीवन रूपी भवन खड़ा होता हैं।अतः इसका सदुप्रयोग करना प्रत्येक विदयार्थी का कर्तव्य है।

स्वाध्यायः किसी एक व्यवसायकारो पर एक अनुच्छेद लिखिए-

गतिविधिः व्यवसायकारों का चित्र चिपकाइए-